ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय

पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)

फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे **निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून**

वर्षः 26 अंकः 73 बुलेटिन अवधिः 20–24 सितम्बर, 2017 दिनः मंगलवार दिनाँकः 19 सितम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	**मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर**				
	20–09–2017	**21–09–2017**	**22–09–2017**	**23–09–2017**	**24–09–2017**
वर्षा (मिमी0)	10	20	20	25	10
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	34	33	33	32	31
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	24	23	23	22
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	पूर्ण आच्छादान	पूर्ण आच्छादान	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	90	95	95	95	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	65	65	65	65	65
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	010	010	010
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**12 से 18 सितम्बर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में हल्के से पूर्णतः बादल छाये रहे तथा वर्षा नहीं हुई, अधिकतम तापमान 34.0 से 34.6 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 24.5 से 26.7 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 78 से 93 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 60 से 67 प्रतिशत एवं हवा 2.3 से 3.3 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व एवं पश्चिम–दक्षिण–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- ❖ अगर गन्ना की बढ़वार अच्छी हो तो इस समय दो पंक्तियों के तीन थालों की एक साथ बंधाई कैंची विधि से करें।
- ❖ वर्षा न हुई हो तो फूल बनते समय एक सिंचाई करें तथा अरहर में नमी की कमी हो तो फलियाँ बनते समय एक सिंचाई करें।
- ❖ दलहनी फसलों में पीला चित्तवर्ण रोग के प्रकोप में पत्तियाँ पीली पड़ने लगती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है।इसके नियंत्रण हेतु कीटनाशी डाइमिथोएट 30 ई0सी0 या मिथाइल–ओ–डिमेटान 25 ई0सी0 के 1 लीटर/है0 की दर से 500–600 लीटर पानी में मिलाकर 2–3 छिड़काव 10–12 दिन के अंतराल पर करें।
- ❖ अगर मक्के की खड़ी फसल में दीमक का प्रकोप हो तो क्लोरपाईरफास 20 ई0सी0 के 5 लीटर /है0 मात्रा को 25–30 कि0ग्रा0 सूखे बालू में मिलाकर, उचित नमी पर सायंकाल में बुरकाव करना चाहिए।
- ❖ धान की फसल में निचली पत्तियों के सूखने के लक्षण दिखाई पड़ने पर कार्बेंडाजिम 50 प्रतिशत डब्लू0पी0 का 1 किलो ग्राम /है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ धान में तना बेधक का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 20 एससी, 150 मि0ली0/है0 या कारटाप 50 एसपी 1कि0ग्रा0/है0 या फ्लूबेन्डियामाइड 480 एससी 75 मि0ली0/है0 या मोनोक्रोटोफास 36 एसएल 1400 मि0 ली0/है0 की दर से छिड़काव करें।
- ❖ मक्का, ज्वार एवं बाजरा फसलों में पुष्प निकलने तथा दाना पड़ने का समय है तथा इस समय खेत में पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। अतः वर्षा न हो रही हो तो आवश्यकतानुसार सिचांई करें। अतिरिक्त जल हेतु उचित जल निकास की व्यवस्था रखें ताकि पानी खेत में जमा न हो।
- ❖ इस समय धान में बाली बनने या बाली निकलने की अवस्था में है और धान की यह अवस्था पानी की कमी के प्रति अति संवेदनशील है तथा इससे बालियों के आकार एवं दानों की संख्या एवं बीज भार में कमी आती है। अतः खेत में पर्याप्त नमी बनायें रखें एवं खेत से पानी अदृश्य होने के एक दो दिन बाद पुनः सिंचाई करें।
- ❖ मक्के की पत्तियो पर लाल रंग के अण्डाकार धब्बे दिखाई पडने पर मेन्कोजेब 1.5 किग्रा0 का घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।
- ❖ धान की पत्तियों पर कहीं–कहीं हिस्पा कीट का भी प्रकोप देखा जा रहा है। जहाँ कहीं इनका प्रकोप दिखाई दे वहाँ ट्राइएजोफॉस 40 ईसी, 750 मि0ली0 या मोनोक्रोटोफॉस 36 एसएल 1400 मि0ली0 छिड़काव करें।
- ❖ अगोला बेधक एवं चोटी बेधक कीट की रोकथाम हेतु कार्बोफ्यूरान 3जी का 30 किग्रा/हैक्टेयर का प्रयोग करें। इस समय खेत में नमी होना आवश्यक है।

उद्यान प्रबन्धः

- ❖ अरबी की फसल में चूसनें वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु एमिडाक्लोरपिड + डाईएथीन 45, 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव दस दिन के अंतर से करें।
- ❖ पिछलें माह बोई गई बैगन की फसल में निराई–गुड़ाई करें। नत्रजन की बची हुई आधी मात्रा का एक चौथाई हिस्सा खेत में टॉप ड्रैसिंग के रूप में डालें और शेष एक चौथाई नत्रजन का 60–65 दिन के अंतराल पर खड़ी फसल में टॉप ड्रैसिंग के रूप में दें।
- ❖ फूलगोभी में कीड़ों से बचाव हेतु मैटासिस्टॉक या एमिडाक्लोरपिड 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- ❖ बगीचें में शाँख गाँठ का प्रकोप होने पर क्यूनौलफॉस 2 मि0ली0/लीटर के हिसाब से प्रयोग करें।
- ❖ बाग की जुताई तथा सफाई करवायें तथा खरपतवार का पूरी तरह नियंत्रण करें।
- ❖ आम में नियमित फलन हेतु पैक्लोब्यूट्राजॉल का प्रयोग करें। 1मि0ली0 सक्रिय घटक का प्रति मीटर छत्र फैलाव के हिसाब से डालें।
- ❖ बगीचे में पौध रोपण का कार्य जारी रखें।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ पशुओं के लिए हरे चारे में दलहनी चारा सर्वोत्तम आहार है जो पशुओं के जीवन यापन के साथ–साथ उत्पादन में भी सहायक होता है। अतः पशुपालकों से निवेदन है कि पशुओं को स्वस्थ रखने व अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने

हेतु सर्वोत्तम दलहनी चारा (बरसीम) अवश्य बोयें क्योंकि 5 कि0ग्रा0 बरसीम (हरा चारा), 1 किलो ग्राम सान्द्र आहार के बराबर होता है।

- इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्यामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- प्रसव के 2 घंटे के भीतर नवजात की अच्छे से सफाई करने के उपरान्त उसको निश्चित रूप से थोड़ी मात्रा (1/2 – 1 कि0ग्रा0) खीस पिला दें।
- पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूंदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।
- नमी की वजह से आहार में फफूंदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।

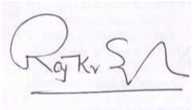

डा0 आर0 के0 सिंह

प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर